अपनी शुद्ध वृत्ति से शक्तिशाली वायुमंडल बनाओ
मनसा सेवा करने की खातिर एकाग्रता को बढ़ाओ
निर्बन्धन बनकर शिव बाबा से मंगल मिलन मनाओ
अपना पवित्र ब्राह्मण जीवन माया से बचाते जाओ
बाप से सारे नाते जोड़ो सर्व बन्धनों से मुक्ति पाओ
अब किसी देहधारी में अपनी मन बुद्धि नहीं डुबाओ
देहिक बन्धनों से मुक्त होकर पूर्ण स्वतंत्र बन जाओ
समय आया बड़ा निकट अज्ञान निद्रा में सोना छोड़ो
बच्चों कुछ भी हो जाए अमृत वेला का क्रम ना तोड़ो
ब्राह्मण जीवन में नहीं रहे नाम मात्र की

अपवित्रता
माताओं में मोह की आदत भी कहलाती है
अपवित्रता
राई बराबर की अपवित्रता भी कहलाती पाप
घनघोर
मिलती सजा बहुत कड़ी मिलता नहीं कहीं कोई
ठौर
थोड़ा बहुत चलता ही है ना समझो इसे मामूली
बात
माया हमला करने को कब से लगाकर बैठी है
घात
शिवबाबा तुम पर लुटा रहे गुणों की भरकर
थालियाँ
पवित्र बने रहना चाहे खानी पड़े कितनी भी
गालियाँ
माया के तूफान से पवित्रता की चिड़िया ना उड़
जाए
बच्चों तुम्हें कहीं धर्मराज के डंडे खाने ना पड़
जाए

ये ओफ़िशियल ईशारा तुम सुनो दोनों कान खोलकर
संकल्प में अपवित्रता ना आए कहता है बाबा बोलकर
वह दिन भी आएगा जब ये बाबा धर्मराज बन जाएगा
तब तो ब्रह्मा बाबा भी शिवबाबा का साथ निभाएगा
अपवित्रता का काला दाग मिटाओ योगाग्नि जलाकर
वर्ना बाबा घर ले जायेगा तुम्हें कड़ी सजाएं खिलाकर
ॐ शांति